लौकिक एवं अलौकिक से क्या मिला क्या दिया

1–लौकिक से क्या मिला वा क्या दिया........।

1–यह हमारे पिछले जन्मों का पुण्य कहें या परमात्मा की रहमत कि जो हमें एक ऐसे घर में जन्म मिला,नहीं तो फुटपाथ या किसी बड़े विकारी, चोर, डाकू के यहाँ भी हो सकता था। जिनके साथ हमें इस समय अपना हिसाब पूरा करना था, वो लोग भले साधारण रहे पर शालीनता के संस्कारों से भरपूर थे,ये मेरा भाग्य ही कहेंगें कि मेरे घर में प्रवेश करते ही घर में पवित्रता आ गयी थी। लौकिक परिवार से हमें जीवन के साथ जीवन में अनेक रंग भरते संस्कार, शिक्षा व जीवन को सींचने भर का स्नेह मिला।

2–बाल्यावस्था में मजबूती सिखाने व हिम्मत बढ़ाने की जगह शिक्षा अधिक पर स्नेह की कमी लगी जो कभी–कभी मजबूरी लगी।

3– साधारण जीवन के कारण या विकसित विवेक के कारण हम लोग उम्र से पहले ही समझदार बन गए या फिर यह भी कहा जा सकता है कि बना दिये गये, कारण चाहे जो भी रहा हो पर समझ उम्र से सदा ऊपर रही।

4–परिवार की देन कहें या आत्मनिर्भरता की शिक्षा,या कम सदस्यों के कारण परिवार में प्रेम का धागा या प्रेम की बरसात कम सिद्धान्तों का प्रभुत्व अधिक, जो जीवन को एक सीधी दिशा में तन्मयता से चलाता गया,और मन बिना किसी माँग के भी अनुशासित रहा।

5–जीवन में मूल्यों का समावेश अवश्य किया गया पर क्रोध एवं दिलशिकस्ती की चेन भी चढ़ती गयी,जिस तरह वीणा के तारों को बहुत टाइट करने पर राग कम ऊँगलियों पर दबाव के निशान अधिक गहरे पड़ जाते हैं,ठीक इसी प्रकार कोमल

मन पर कठोरता से धारा से विपरीत एवं स्पीड से तेज चलने की निरन्तर हिदायत भी कान में गयी।

6–निःसन्देह मजबूत इरादों को द्रढ़ता के साथ हर मंजिल फतेह करने का न सिर्फ इरादा पैदा किया गया,बल्कि कभी न हारने का जज्बा भी भरा गया,जिससे कहीं–कहीं दिल शिकस्ती या कभी–कभी रेस के साथ रीस भी पैदा हो गयी।

7–लौकिक परिवार में ऐसा लगा कि पहले प्यार की कमी रही और जब प्यार आया तब तक वो स्वार्थ के रंग में रंगा दिखा,पर यह भी कहा जा सकता है कि जब हम आये तब तक लोगों के अन्दर प्यार खत्म हो गया था या फिर मेरे हिसाब में स्नेह का खाता खाली हो चुका था या ये भी कहा जा सकता है कि तब तक संसार में क्रोध का प्रारूप बढ़ गया था या फिर स्वार्थ का साम्राज्य आ गया था, इसलिए सिर्फ समझानी ज्यादा मिली पर साथ ही उनकी कमी कमजोरियाँ तो विरासत में स्वतः ही मिलती गयी,और बीमारियाँ तो चक्रवृद्धि ब्याज सहित अपने आप ट्रॉन्सफर होती गयी।

8–अगर परिवार के किसी मेम्बर ने भी कोई गल्ती कर दी तो सारे समाज की नजरों में हम भी अछूते नहीं दिखे, भले हमें उस बात की जरा भी भनक तक न हो, इस कारण परिवार के कारण ही अपराध बोध करना सहज आ गया, गल्ती किसी की भी हो पर मन में आशंका का डर पहले ही घर कर जाता।

9–परिवार ने ना सन्तुष्ट होने वाले सम्बन्धों की एक लम्बी लिस्ट जो उम्मीद के बोझ तले दबी सम्बन्धों को निभाना कम मजबूरियों की दूरियाँ बढ़ाती अधिक लगती रहीं।

10–परिवार के हर सदस्य से बिना दिये ही मन पर कुछ ऐसे दाग लगते गये या हम खुद लगाते गये, जिनसे कुछ तन की बीमारियाँ बनकर आजीवन अविनाशी दर्द बनकर साथ ही चल रही है।

2–लौकिक को क्या दिया..............

1–लौकिक में अपनी उपस्थिति से उस कुल एवं खानदान को मजबूती दी,उसकी मान मर्यादा को बड़े दिल से आगे बढ़ाया।

2–परिवार के हर मेम्बर के प्रति निःस्वार्थ प्रेम की न सिर्फ बरसात की बल्कि हर कदम पर सहयेग की छतरी भी लगायी,उम्मीदों को अंजाम तक पहुँचाने का हर वो प्रयास किया जो मेरे लिये यथोचित एवं मुमकिन लगा।

3–परिवार के हर बड़े सदस्य ने या तो अपने संस्कारों में ढ़ालने की कोशिश की या फिर अपनी बुराइयों से बचाने के लिये अच्छी आदतों को डालने की जो बाध्यता की गयी, उसके चक्कर में उनके संस्कार स्वतः दबे पाँव अन्दर प्रवेश कब और कैसे कर लेते हैं यह न उन्हें पता पड़ता न ही हमें मालूम पड़ा।

4– जीत को जीवन का ध्येय बनाने की फिकर में स्वाभिवकता से हार हो ही जाती है, हमने परिवार को न सिर्फ अपने होने का सम्बल दिया, बल्कि बहुत सारे कार्यों की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेकर परिवार के हर सदस्य को निश्चिन्तता का एहसास दिया।

5–सिद्धान्तों की परिधि में रहकर परिवार को फ्री जीवन जीने का भरोसा दिया, आधुनिकता के अन्धानुकरण से दूर रह लौकिक के लोक–लाज का संसार सलामती से सहेजते हुए सबके सामने गर्वित सिर उठा कर उनके जीने का उन्हें उनका रूतबा दिया।

6–अपने तन–मन को परिवार के प्रति समर्पित करते हुए परिवार के पन्नों में त्याग की पराकाष्ठा का इतिहास लिखा।

7–जीवन के हर कदम में गुणों की गरिमा का रंग भर परिवार को महानता की श्रेणी में सिर उठाकर खड़ा करने की पहल की।

8–सत्य की कसौटी पर व्यवहार को तराशते हुए परिवार की प्रतिष्ठा को समाज के आइने में मौजूदा वक्त के लिहाज से बहुतों से आगे खड़ा किया।

हॉ लौकिक परिवार ने हमें ऐसी परवरिश दिया या माहौल दिया, जिसमें आध्यात्म की लगन बाल्याकाल से सचेत रखा, और वह अन्तोगत्वा आध्यात्मिकता जीवन का ध्येय बन गया,कोई खास प्रयत्न नहीं कराया गया, पर कभी रोका भी नहीं गया, इसलिए जो मेरा जीवन ऐसा बना, उसका कुछ श्रेय लौकिक परिवार को भी अवश्य मिलेगा।

3–अलौकिक परिवार से क्या मिला............

1–इस जीवन वा इस परिवार में जन्म लेकर हमने सिर्फ लिया ही है, न सिर्फ इस जीवन के लिए पर जन्म–जन्मान्तर का निवेश भी करना सीखा और कर भी रहे हैं।

2–यहॉ न सिर्फ स्वयं का सत्य परिचय जाना बल्कि अपने साथ अपने अविनाशी पिता व स्वीट होम को भी जाना, जन्म लेते ही अपार ज्ञान का भण्डार, हर परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने के अचूक उपाय या राहत रूह दिया, सत्य ज्ञान से मुर्छित हो गयी चेतना में जैसे पुनः प्राणों का संचार कर दिया हो।

3– ड्रामा के ऐसे राजों से रूबरू हुए कि कोई भी घटना दुख की लहर हमें अपने साथ दुख की लहर में बहा नहीं ले जाती। कभी भी किसी से नाराज न होने का असली राज पता पड़ गया, जिससे सम्बन्धों एवं संगठन का सच्चा सुख मिला।

4–मुरली के रूप में ऐसा अलादीन चिराग हाथ में मिल गया है, जिसमें हर सवाल का जवाब तो है ही, परन्तु सर्व प्राप्तियों की सुन्दर चाबी भी है, जिसमें अतीन्द्रिय सुख तो समाया ही है।

5–बाबा शब्द ऐसा जादू का मन्त्र मिला, जिससे हर असम्भव सम्भव किया जा सकता है, बाबा शब्द का महामन्त्र सर्व सिद्धियों की प्राप्तियाॅं तो कराता ही है, किसी भी दर्द का अविनाशी इलाज भी है।

6–न सिर्फ शब्द है बाबा, पर हमने उस जगतनियन्ता को ही पा लिया है, जिसके मात्र दर्शन के लिए भक्त लोग जन्म–जन्म तपस्या करते हैं, गला काटने के लिए तैयार हो जाते हैं, जो सर्वशक्तिमान है, नवयुग निर्माता, भाग्य विधाता है और वह हमारा है। भाग्य विधाता ही मिल गया।

7–आदि देव जो संसार का प्रथम पुरूष है, जो मानव जगत में सर्वोत्तम है, उसके साथ मेरा रोल है, वह मेरे इन्तजार में है और अपना अपार प्यार हम पर बरसा रहे हैं।

8–परमपिता जो प्यार का सागर है, वह अपना अथाह प्यार सिर्फ मेरे लिए लेकर आया है, वह मेरी पालना कर रहा है, वह मेरी छत्रछाया बन कर मेरे साथ रहता है।

9–अलौकिक परिवार में जन्म लेते ही सबकी नजरों में खुशी की चमक देख मन में खुशी की लहर दौड़ गयी, हर नजर में शुभ कामनाओं, शुभ भावनाओं से आगमन का स्वागत किया गया, ऐसा लगा जैसे हमारे ही इन्तजार में सबने समय को रोक रखा हो। अपनी उपस्थिति पर पहली बार अपने जीवन पर बेहद गर्व हुआ, उस परिवार में शामिल होकर आनन्द की अनुभूति के साथ, निर्भय होकर जीवन जीने का माहौल देख, कि जहाॅं चारों ओर लोग कालिया नाग की तरह हर कर्मेन्द्रिय से

विष वमन करते हो, और अपने हर कर्म से जहरीली आग निकाल रहे हों, वहाँ प्रेम के साथ शान्ति का एहसास मिलने पर मन को असीमित खुशी मिली।

10–शरीर का शेप तो लौकिक से ही लाये थे, पर जीवन को आकार तो अलौकिक में ही मिला, जिससे दिशा और दशा बेहतर से भी आगे निकल बेस्ट बनती जा रही हैं, जैसे खाली घड़े में रत्न भरकर रत्नों का घड़ा बना कर वेल्यूबुल बना दिये हो, इसलिए किसी और को हो या न हो पर हमें अपने जीवन को देख कर खुशी ही नहीं अपितु गर्व है।

11–कमजोर मन एवं बीमार तन को न सिर्फ जीने का सहारा दिया, बल्कि तन मन दोनों को उर्जा से भरपूर कर, संकुचित चित्त को शक्ति का पुंज बना दिया। न सिर्फ अपने आपको श्रेष्ठ करने में समर्थ बनाया, अपितु अनेकों को भी पथ दिशा दिखाने में एवं उम्मीद की किरण दिखाने में भी सक्षम बना दिया।

12–जिन्दगी के हर कदम पर फीमेल समझाकर कमजोरी का हवाला देते जो नाउम्मीदों के घटाटोप अँधेरे पथ पर चलना सिखाते–सिखाते, साथ–2 आँसुओं को भी परछाई की तरह पीछे लगा दिया, वो जैसे आजीवन साथ देने के लिए कटिबद्ध हों, निगाहों में ऐसे समाये कि बस अब निकले की निकले, आज हिम्मत के साथ पॉवर ही नहीं पॉवर हाउस मिल गया है, जहाँ हर संकल्प हर अंग में उर्जा का संचार कर रहा है।

13–कलियुग में भी सतयुग जैसी जीवन जीने की कलायें तो दी ही हैं, लेकिन कलियुग के अन्त में भी सर्व कलाओं से भरपूर बनने की कला मिल गयी है।

14–आधुनिकतम् से नवीनतम् साधनों की सुविधाओं के बीच में साधना के पथ पर अडिग हो चलने का आधार मिला।

15–सब कुछ होते हुए भी कुछ भी मेरा नहीं है, ये त्याग का पाठ पढ़ा और वैराग्य की बुलन्दियों पर चढ़ने की योग्यता मिल गयी।

16–जीवन के हर कदम पर मैं साथ हूँ का वादा निभाने वाला साथी मिला और हर ऊँची मंजिल फतेह करने के वक्त भी निश्चिन्त रहने के लिए मूलमन्त्र दिया– बच्चे तुम चिन्ता न करो मैं बैठा हूँ।

17–ऐसा समर्थ साथी मिल गया जो न सिर्फ हर परिस्थिति, हर पल, हर जगह हाथ पकड़ा है, बल्कि हमें अपने कंधों में एवं पलकों पर बिठाकर अपने सम्पूर्ण प्यार की बरसात कर हमें अपने जीवन का मकसद दे दिया।

18–ऐसा बाप मिला जिसकी विरासत तीनों लोकों की है, और वह हमें 750 करोड़ में से ढूँढ़ कर देने के लिया आया है, तीनों लोकों के साथ अभी–अभी ज्ञान गुण शक्तियों की भी विरासत मिल रही है।

19–ऐसा टीचर मिला जो ज्ञान का सागर है, कभी किसी से पढ़ता ही नहीं, और हमें फ्री में पढ़ा रहा है, हम तो सब कुछ भूलकर बुद्धू बन चले थे, और वो हमें इतना समझदार बना रहे हैं, कि हम उनके ही दिल पर राज करने लगते हैं, और इतना बुद्धिमान बना देते हैं, कि भविष्य 2500 वर्षों तक किसी से भी सलाह लेने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

20–ऐसा सतगुरू मिला जो कोई भी सेवा नहीं लेता, चरणों में टिप्पड़ नहीं घिसवाता, और निःस्वार्थ वरदानों की वर्षा करता है, और वरदान में भी तन–मन–धन अपार सुख–शान्ति 2500 वर्षों के लिए जितना चाहो ले सकते हैं, ऐसा भाग्य बनाने की कलम हमारे ही हाथ में दे दिया है।

21–योग का ऐसा इरेजर मिल गया जिससे न सिर्फ 63 जन्मों के पाप मिटा सकते हैं बल्कि आत्मा में बल भरकर आत्मा को अनेक जन्मों के लिए भी पॉवरफुल बनाने के साथ वेल्यूबुल बनाने की युक्ति मिल गयी।

22–बेहद का ऐसा पवित्र परिवार मिला जिसका हर सदस्य पवित्रतम् पथ का अनुगामी है, जिनके सानिध्य में मन को बेहद हर्ष होता है, ऐसा पवित्र संग जो परमात्म रंग लगाता है।

23–इतने देशों में अनगिनत घर मिले और हर सदन इतने निर्मल एवं श्रेष्ठ कि दर पर कदम रखते ही मन के ताप हरते दिल को शान्ति का आरम देते, वहाँ ऐसा रूहानी इल्म कि भाग्य के दरवाजे खोल दें।

24–मधुबन जो संसार का सर्वश्रेष्ठ स्थान, प्रजापिता की तपोभूमि, वह मेरा अपना घर, जहाँ के वायुमण्डल में पवित्र प्रेम की निर्मल गंगा बह रही है, जहाँ के प्रवास में ही उर्जा संचारित होती है, जिसका सानिध्य मानस में वैराग्य एवं परमात्म प्रेम की तरंगे प्रस्फुटित करता है, मधुबन का प्रांगण मन को मुदित कर, चित को चैन, दिल को दिलाराम से अनमोल मिलन कराने का पॉवर–प्वॉइन्ट, तन–मन दोंनों को चार्ज करने वाला चार्जर मिल गया है।

25–इतनी महान आत्माएं तपस्वी दादियों की नजर–ए–इनायत, उनकी मधुरिमा घोलती ओजस्वी वाणी कानों में संचार करती दिल को रूहानियत से भरने का सौभाग्य मिला।

26–प्रभु प्रेम लुटाती हमारी दीदियाँ, जिनके अपनेपन की भावना, जीवन को दिशा देता उनका मार्गदर्शन, निःस्वार्थ प्रेम का बहता झरना, दिन रात की मेहनत हमारे जीवन को तराश कर कुन्दन की तरह चमकाने की प्रबल प्रेरणा, जो मन को ऐसा

परिस्कृत करती है, कि शीशे का जीवन भी हीरे की तरह चमक जाये ऐसे बेमिसाल टीचर मिलीं।

27–आधुनिकता के लिपटे जहान में, विकारों के आवरण में छिपा मानव, तमोप्रधान के रंग में डूबी इंसानियत, जहाँ ईर्ष्या द्वेष की प्रचण्ड अग्नि में सब कुछ जला कर भस्म कर रही हो, वहाँ ऐसी छाँव का आलय अपना ही घर सेवाकेन्द्र का स्थान दिया।

28–जहाँ मानव सब कुछ खाके अपने शरीर के साथ मन–बुद्धि को भी भ्रष्ट कर रहा हो, जहाँ कुछ भी खाने योग्य न बचा हो, कुछ भी सात्विक नहीं रहा, वहाँ हमें खाने के लिए रोज 3 बार प्रभु प्रसाद ब्रह्माभोजन मिला।

29–जहाँ पोशाक को देखकर भारतीय संस्कृति को शॉक लग जाये, जहाँ सही–सलामत कोई भी वस्त्र नहीं, वहाँ हमें फरिश्तों जैसी ड्रेस मिली, जिसे देखकर विकारी मन में भी निर्मलता एवं वैराग्य आ जाये।

30–ज्ञान धन के साथ श्रेष्ठ कर्मों का धन, दुआओं का धन, शुद्ध संकल्पों का धन मिला जो कि दूसरे जन्मों को भी मालामाल बनने की करामात सिखाता।

31–सेवा का ऐसा ब्लैन्क चेक दिया, जो कहीं भी और कितनी भी धनराशि भरकर कितना भी धनवान बनने का सुअवसर मिल गया।

32–संगठन के सूत्र में ऐसा मोती बनने का सुन्दर भाग्य मिला, कि सन्यास लेने के बाद भी एक वृहद सुन्दर, पवित्र मीठा परिवार मिला।

33–लौकिक परिवार में कन्या के जन्म लेते ही कितने ही सगे संबन्धियों के चेहरे पीले पड़ जाते हैं, चारपाई ही जैसे उल्टा कर देते हैं, उस माहौल में आगे बढ़ता जीवन कहीं न कहीं मन लड़की होने का न छूटने वाला दर्द का नासूर जो

कदम–कदम पर बढ़ता गया, पर यहाँ आते ही परिवार के हर सदस्य की हमारे आने की उनके चेहरे पर खुशी की रौनक देख, न सिर्फ जीवन की मायूसी खत्म हुई, बल्कि जिस उत्साह से हमारा जोरदार ढंग से अभिनंदन किया गया, उससे जीवन की मुरझाइस ऐसे बदली कि प्रसन्नता की बहार ही आ गई हो। परिवार में मेहमान समझ कर मेहमान नवाजी नहीं किया गया बल्कि परिवार का मेम्बर मान राइट हैन्ड एवं कमाऊ पूत, संस्था को आगे बढ़ाने का आधार होने का एहसास दिलाया गया, जो प्यार व सम्मान व जिम्मेवारी की भावना मिली, उससे न सिर्फ जीवन की हर दिल शिकस्ती खत्म किया, बल्कि जीवन ही मुस्कराहटों के आह्लाद से भर गया, जिससे हमें न सिर्फ अपने कुमारी जीवन पर गर्व हुआ, अपितु परमात्म नजर में औरों से बेहतर विश्वाशपात्र एवं श्रेष्ठतम् दर्जा मिला, इसलिए उसका खुमार चढ़ गया।

34–2500 वर्षों से संसार को हजारों धर्मात्माओं, महानात्माओं एवं पुण्यात्माओं ने संसार एवं संसार के वासियों को सुखमय बनाने की पुरजोर कोशिश भी की जिसके लिए उन्होंने बेहद यात्नायें भी सहन की, पर संसार को पतन में जाने से नहीं रोक पाये, पर जब भगवान सृष्टि का परिवर्तन करने के लिए धरा पर आते हैं, और नये विश्व के सृजन करने की योजना क्रियान्वय करते हैं, तो उसमें हीरो पार्ट के लिए मेरा सलेक्शन हो गया।

35–दिनचर्या परफेक्ट होने के कारण हर कार्य समय से मैनेज करने का परफेक्ट तरीका मिल गया है।

36–जितना ही समाज एवं परिवार से अबला एवं कोमलता का स्थाई लेवल लगने के कारण किसी भी कार्य के लिए जो सदा आधार के बिना असहाय या अक्षमता घर कर गई थी, परमात्मा पिता के विश्वाश से न सिर्फ कोमलता का कुशलता में

परिवर्तन हुआ, बल्कि सर्वशक्तिवान ने अपना साथ देकर बड़े से बड़े कार्य के लिए भी निराधार रहने की स्थिति बनाने के लिए हमें भी सशक्त बनने की राहें दिखा दी।

37–विकारों पर विजय के साथ, मन को भी जीतने की विधियों के साथ, पतित आत्माओं के पापों को धोने योग्य, ज्ञानामृत लेने एवं देने की योग्यता मिल गयी।

38–दूर बैठे भी दूरादेशी एवं त्रिकालदर्शी बनकर प्रकृति के साथ अन्य दूर बैठी आत्माओं को मन की बात बताने एवं विचारों के परिशोधन की उत्कृष्टतम् मेधा मिली ।

39–दुनिया भर के सम्बन्ध दिखावे के अधिक उनके तेरे – मेरे के फेरे से निकल कुछ भी मेरा नहीं है, यह सत्य जान कर निश्चिन्त हो डबल लाइट जीवन जीने का नया अन्दाज आ गया है।

40–हर आत्मा परमात्मा पिता की सन्तान होने के कारण आत्मा भाई–भाई हैं, तो स्वयं को आत्मा समझ हरेक को अत्मा देख आत्मा से बात करने का एवं दृष्टि से निर्मल प्रेम देने का नया रूहानी सलीका आ गया है।

समाज से क्या लिया क्या दिया..........।

।– लौकिक में समाज से बहुत कुछ लिया, जीवन के साथ जीवन से जुड़ी हर बात परिवार जो कि समाज की ही एक इकाई है, गोया समाज से ही ली है। बोलना चलना, कपड़े पहनना, बाल बनाना, खाना बनाना, कोई भी कार्य करना, सबके साथ व्यवहार कैसे करना है, परिस्थितियों से कैसे निपटना है, शिक्षा, स्वास्थ्य व भोजन, साधन, सुविधायें आदि–आदि सब समाज की ही देन हैं, पर ये सर्वश्रेष्ठ जीवन का उपहार लेकर भी समाज की कई विकृतियाँ भी न चाहते हुए अर्न्तमन तक घर कर गई, कि जीवन जीने का कोई आनन्द ही नहीं आ रहा था, कोई श्रेष्ठता भी सर्वश्रेष्ठ जीवन में नहीं दिख रही थी, क्योंकि समाज ने दिया तो बहुत कुछ, लेकिन

देने के पीछे जो अपेक्षा वा उपेक्षा की दो धारदार तलवारें जो सम्बन्धों के सूत्र में, जीवन पथ पर लटका दी हैं, जिससे निश्चिन्त होकर जीना तो कभी आया ही नहीं, पर मर–मर कर मरना भी नहीं आया, कारण समाज में जितनी विकृतियाँ हैं रोज कहीं न कहीं, किसी न किसी के द्वारा तो सामने आ ही जाती, जिससे समाज में जीवन की कमाई कम किसी न किसी प्रकार लड़ाई में ही समय गुजरा, चाहे बचपन में भाई–बहनों, चाहे माँ–बाप के आपसी मतभेद, चाहे अपने ही संस्कारों की, चाहे अधिकारों या वर्चस्व की या फिर इज्जत की लड़ाई हो तो वहाँ समाज कब ब्लाटिंग पेपर की तरह सारी खुशियाँ सोख, उदासी की चद्दर में लपेट समय की पटरी पर कितनी बार परीक्षाओं व परिस्थितियों में लुढ़काता है, और मन भी ब्लाटिंग पेपर की तरह ही समाज की सारी विकृतियाँ ऐसे अवशोषित कर लेता है कि न बड़ों को पता पड़ता न ही स्वयं को, और फिर बहुतायत कर देने के लिए तैयार है। हाँ कई बार कमजोरों या निर्बल के प्रति अत्याचार देखकर अन्यायिओं के प्रति एवं समाज के प्रति आवाज उठाने की पुरजोर कोशिश करने की पहल से कुछ समाज सेवा का लेवल लगा, पर समाज सेवा तो कम पर परेशान ज्यादा हुए, एक प्रकार से कुछ गुणों का प्रभाव डाला होगा पर अवगुणों को लिया और देने में भी पीछे नहीं कहेंगें

2–अलौकिक जीवन में क्या लिया क्या दिया.............

1–समाज से दुआयें लेने एवं भाग्य बनाने के लिए सेवा करने के लिए लोग मिले, विकृति भरे समाज को अपने गुणों का विकास करके सुख देने का अवसर लिया, योग के माध्यम से प्रकृति के साथ सारे विश्व को पावनता का वायब्रेशन, अपने आस–पास के लोगों को पवित्र जीवन की प्रेरणा एवं वाणी के द्वारा जीवन जीने की कला, उमंग–उत्साह की श्वाँश, कुछ कर गुजरने का जज्बा, देश सेवा के लिए अपना एवं अपनी चीजों का सदुपयोग करना आदि–आदि।

2–समाज को हम दें या न दें पर हम जो भी करते हैं, तो वह सभी कुछ समाज को पहुँचता ही है, और वाणी के द्वारा भी समाज को उन्नति की राह दिखाने की पुरजोर कोशिश रहती है। अपने मन–वाणी–कर्म के साथ समय, श्वाँश के द्वारा सिर्फ सेवा ही करने के लिए समर्पित हुए हैं। परमपिता का सन्देश जन–जन को दे, उनके दुःख दूर कर सदा सुखी बनने का पथ दर्शा दे रहे हैं, अपने जीवन को पवित्र बना समाज में स्वच्छता एवं पवित्रता का संदेश दे रहे हैं। अपने सानिध्य से हर प्राणी को प्रेमयुक्त फ्री हो जीने का माहौल दे रहे हैं। बुराइयों से समाज में पतन का जो घुन लग गया है सद्गुणों के द्वारा समाज को फिर से उत्कृष्ट बनाने में सहयोगी हैं।

3–आगे आने वाली पीढ़ी को देने के लिए जीवन में गुणों की ईटों में साधना की सीमेन्ट लगा, प्रभू प्रेम का पानी ले चरित्रवान इमारत मूल्यों से सजाकर विरासत में दे रहे हैं।

4–त्याग की कलम से वैराग्य की पटकथा लिख, तपस्या की स्टेज पर सिद्धान्तों का जीवन्त अभिनय कर, हर शख्श के मन में सत्य को जानने की जिज्ञासा की जागृति करने की अर्हिनिश सेवा में है।

ओमशान्ति

ब्र0 कु0 सुमन

जानकीपुरम लखनऊ